ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 14 अंक 13 कुल पृष्ठ-8 20 से 26 दिसम्बर, 2018 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853119 सम्वत् 2075 मा.शी.कृ.-15

अन्याय एवं अधर्म के विरुद्ध संघर्ष करना ही गीता का मुख्य संदेश है

– स्वामी आर्यवेश

जीन्द में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय गीता जयन्ती महोत्सव में सभा प्रधान का ओजस्वी उद्बोधन

हरियाणा सरकार द्वारा 7 से 18 दिसम्बर, 2018 तक आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय गीता जयन्ती महोत्सव के अन्तर्गत जिला प्रशासन जीन्द की ओर से 16 से 18 दिसम्बर, 2018 को भव्य गीता महोत्सव आयोजित किया गया। इस अवसर पर डी. आर.डी.ए. भवन में गीता पर विशेष संगोष्ठी आयोजित की गई जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी को आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सफीदों के विधायक चौ. जसबीर सिंह देशवाल एवं विशिष्ट अतिथि श्री सुरेन्द्र सिंह बरवाला पूर्व शिक्षामंत्री थे। उनके अतिरिक्त, अतिरिक्त उपायुक्त डॉ. मुनीश नागपाल, श्री वीरेन्द्र सहरावत एस.डी.एम. एवं श्री सत्यवान मान नगराधीश, श्री सत्यनारायण शास्त्री, श्री सियाराम शास्त्री, डॉ. जगदीश चन्द्र राही एवं कार्यक्रम के संयोजक श्री राजेश स्वरूप शास्त्री आदि ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। संगोष्ठी की व्यवस्था जिला लोक सम्पर्क अधिकारी श्री सूबे सिंह एवं डॉ. पवन आर्य ने संभाली। इस अवसर पर संगोष्ठी के अतिरिक्त प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया था जिसमें विविध विभागों की ओर से स्टॉल लगाकर अपनी उपलब्धियाँ प्रदर्शित की गई थीं।

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से मिलते हुए उनके सहपाठी पूर्व शिक्षामंत्री श्री सुरेन्द्र सिंह बरवाला जी एवं सफीदों के विधायक श्री जसवीर सिंह देशवाल

संगोष्ठी में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने गीता के महत्व पर प्रकाश डाला और बताया कि गीता का उपदेश देने वाले महान युग पुरुष योगेश्वर श्रीकृष्ण ऐसे महापुरुष थे जिनका पूरा जीवन संघर्षों में बीता। उनके जन्म से पूर्व ही उनकी मौत का आदेश कंस द्वारा दिया गया था और बाद में भी कंस ने कुश्ती दंगल के बहाने से उन्हें मारने का षड्यन्त्र रचा था जिसमें वह सफल नहीं हो सका एवं स्वयं योगेश्वर श्रीकृष्ण के हाथों मारा गया। श्रीकृष्ण जी के जीवन का मूल उद्देश्य अन्याय एवं अधर्म से लड़ना और धर्म की स्थापना करना था। इसी के अनुरूप उन्होंने जीवनभर अन्याय एवं अधर्म से लड़ने की प्रेरणा लेकर अपने जीवन को सार्थक किया। स्वामी जी ने कहा कि जब महाभारत का युद्ध प्रारम्भ होने वाला था तब मोहबश स्वजन प्रेम से प्रभावित होकर धनुर्धर अर्जुन ने युद्ध करने से मना कर दिया और शस्त्र जमीन पर रख दिये। तब योगेश्वर श्रीकृष्ण द्वारा दी गई युद्ध के लिए तैयार होने की प्रेरणा एवं उपदेश ही गीता है। महाभारत के भीष्म पर्व में भी योगेश्वर श्रीकृष्ण के गीतोपदेश का उल्लेख व्यास जी ने किया है।

स्वामी जी ने योगेश्वर श्रीकृष्ण के जीवन एवं गीता के संदेश पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए श्रोताओं का आह्वान किया कि उन्हें अपने जीवन में यह संकल्प लेना चाहिए कि जहाँ–जहाँ भी अन्याय एवं अधर्म होगा वहीं पर हम उसका डटकर विरोध करेंगे और न्याय तथा धर्म का पक्ष लेंगे। स्वामी जी ने कन्या भ्रूण हत्या, गौहत्या, नशाखोरी जैसी सामाजिक कुरीतियों को अधर्म की संज्ञा देते हुए इनके विरुद्ध आन्दोलन करने की प्रेरणा दी। उन्होंने धर्म के स्वरूप की व्याख्या करते हुए कहा कि अपने कर्त्तव्य का पालन करना तथा अपनी आत्मा के प्रतिकूल व्यवहार को अन्यों के साथ न करना ही धर्म है। महाभारत के श्लोक के माध्यम से उन्होंने कहा कि भीष्म पितामह ने पाण्डवों को धर्म का उपदेश देते हुए कहा था कि –

श्रूयताम् कर्म सर्वस्व, श्रुत्वा चैव धार्यताम्।

आत्मनः प्रतिकूलानि, परेशान्य समाचरेत।।

अर्थात् जिस व्यवहार को आप अपने लिए प्रतिकूल या गलत मानते हैं वह व्यवहार आप अन्यों के साथ न करें, यही धार्मिक होने की पहचान है। वर्तमान समय में धर्म के नाम पर जिस प्रकार से लोग ढोंग, पाखण्ड, अन्धविश्वास एवं कपोल कल्पित बातों में उलझे हुए हैं इससे धर्म पूरी तरह से समाप्त प्राय हो चुका है। हर व्यक्ति छल, कपट, धोखाधड़ी एवं सीनाजोरी से अपने ही हित के लिए कृतसंकल्प है और दूसरों के हित और अधिकारों को छीनने के लिए प्रयत्नशील रहता है। स्वामी जी ने कहा कि यह कैसे हो सकता है कि एक व्यक्ति व्यक्तिगत जीवन में अधर्म करता रहे और सामाजिक जीवन में अधर्म को फलता–फूलता देखता रहे और कुछ कर्मकाण्डों द्वारा ही अपने कर्त्तव्य की इतिश्री करता हो। धार्मिक व्यक्ति कभी भी दूसरे का अहित, अपयश एवं हानि नहीं कर सकता। वह समाज में अन्याय और अधर्म को चुपचाप नहीं देख सकता, बल्कि उसका अपनी सामर्थ्य के अनुसार विरोध ही करता है। किन्तु अब तो कुंए में भांग पड़ी हुई है। धर्म के सच्चे स्वरूप को कोई समझने को तैयार नहीं। गीता का ज्ञान भी हमें कर्म करते हुए निष्काम भावना की प्रेरणा देता है और अधर्म चाहे जिन्हें स्वजन कहते हैं वे भी करते हों, उनका भी विरोध करने की प्रेरणा देता है।

मीडिया से बात करते हुए सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी

प्रदर्शनी में ग्राम निडानी, जिला–जीन्द के अन्तर्राष्ट्रीय अखाड़े के पहलवानों के बीच स्वामी जी

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

महान् शिक्षाविद् : स्वामी श्रद्धानन्द

– आचार्य विधुशेखर भट्टाचार्य

सन 1905–1906 के आसपास की बात है, मुझे गुरुकुल ब्रह्मचर्याश्रम हरिद्वार की यात्रा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था गुरुकुल के वार्षिकोत्सव पर होने वाले एक सरस्वती सम्मेलन के सभापति पद के लिए मुझे वहां निमंत्रित किया गया था। मुझे अच्छी तरह से याद है कि मैंने वहां जो कुछ देखा था उसका मुझ पर और मेरे दो साथियों के हृदय पर गहरा प्रभाव पड़ा था। खूब तड़के हमारी गाड़ी हरिद्वार स्टेशन पर पहुंची और उसी समय हम लोग गुरुकुल के लिए रवाना हो गए और कुल में हम लोग 9:00 बजे पहुंचे। उस समय वहां जलसे की कार्यवाही हो रही थी। अपने एक दोस्त के साथ मैं ज्यों ही पंडाल में पहुंचा उसी समय मुझे महात्मा मुंशीराम के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यही महात्मा मुंशीराम बाद में स्वामी श्रद्धानंद के नाम से भारत वर्ष भर में विख्यात हुए। मुझे देखकर वह उठ खड़े हुए और बड़े प्रेम के साथ उन्होंने मेरा स्वागत किया। मैंने बड़े सम्मान के साथ उन्हें प्रणाम किया। मैंने देखा कि उनकी पोशाक बड़ी सादी है सिर्फ एक देसी धोती एक कुर्ता एक पीला दुपट्टा। यह पीला दुपट्टा गुरुकुल की पोशाक का विशेषकर ब्रह्मचारियों की पोशाक का मुख्य अंग था। महात्मा मुंशीराम के चारों ओर उनके प्रिय ब्रह्मचारी अपनी पीली पोशाक में बैठे थे। पंडाल को बड़े अच्छे ढंग से सजाया गया था। ब्रह्मचारियों के हाथों से बने संस्कृत भाषा के सुंदर–सुंदर फोटोस से पंडाल शोभित हो रहा था। ब्रह्मचारियों का वह सुलेख मुझे एक उत्कृष्ट कला के समान जान पड़ा। मुझे बताया गया कि इस सुंदर सुलेख के प्रणेता गुरुकुल के ही एक अध्यापक हैं उनका नाम पंडित गौरीशंकर भट्ट था। इस तरह के कुछ सुंदर लेख ब्रह्मचारियों ने मुझे भी भेंट करने की कृपा की। सभा के बाद गुरुकुलीय सज्जनों से प्रणाम कहकर मैंने विदा ली। गुरुकुल से लौट कर वे लेख मैंने शांतिनिकेतन में दिखाए। शांति निकेतन के विद्यार्थियों ने उन सुलेखों की बड़ी प्रशंसा की। मुझे मालूम नहीं कि गुरुकुल में सुलेख की वह उन्नत कला आज भी उसी रूप में विद्यमान है या नहीं। पंडाल के मोटोस पर उन्हें बनाने वाले ब्रह्मचारियों का नाम भी लिखा हुआ था जिससे उनकी सुंदरता और भी बढ़ गई थी।

महात्मा मुंशीराम जी को उनके मुख्याधिष्टातृत्व में देख सकना मेरे लिए सचमुच एक बड़े सौभाग्य की बात थी। वास्तव में वह एक बड़े निर्माण कर्ता थे और उन्होंने अपनी निर्माण शक्ति को अपनी रचना गुरुकुल में प्रकट किया था प्रायः प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में कुछ ना कुछ निर्माण करता ही है परंतु निर्माण का कार्य दो प्रकार का होता है एक तो दैवीय दूसरा आसुरिक मुझे यह कहने की आवश्यकता नहीं कि महात्मा मुंशीराम जी का निर्माण कार्य दैवीय ढंग का था यह दैवीय निर्माण कार्य न केवल उन्हीं के मोक्ष का साधन था अपितु उनके देश बल्कि संपूर्ण मानव जाति को मुक्ति मार्ग पर ले जाने वाला था। उन्होंने प्राचीन शिक्षा प्रणाली का पुनरुद्धार किया इस प्राचीन प्रणाली में उन्होंने नवीन स्थितियों के अनुसार परिवर्तन भी किए। इस प्रणाली का मुख्य उद्देश्य ब्रह्मचर्याश्रम का पालन करना था। आजकल की प्रचलित शिक्षा पद्धति से साधारण स्कूलों कालेजों और विश्वविद्यालयों से जो विद्यार्थी निकलते हैं वे एक तरह से केवल बोलने वाली मशीन ही होते हैं। वास्तविक जीवन का उनमें प्रायः अभाव होता है। अतः जो कुछ वे पढ़ते हैं उसे भी व्यवहार में नहीं ला सकते। जो शिक्षा पाते हैं उसमें और उनके व्यवहारिक जीवन में कोई समता प्रायः प्रतीत नहीं होती इसका मुख्य कारण यही है कि आज के विद्यार्थियों को ब्रह्मचर्य की कीमत नहीं समझाई जाती। पढ़े लिखे लोगों से समाज चल सकता है परंतु दुश्चरित्र लोगों से समाज कायम नहीं रह सकता। वह शक्ति ब्रह्मचर्य ही है जिससे मनुष्य का शरीर मन और मस्तिष्क मजबूत बनता है और इसके द्वारा वह अपने कर्तव्य पालन के योग्य बन सकता है। महात्मा गांधी को देखिए और आप इस तथ्य को माने बिना न रहेंगे। महात्मा मुंशीराम में आजकल की शिक्षा पद्धति में ब्रह्मचर्य को आधारभूत स्थान दिया। शिक्षा पद्धति में बड़ी–बड़ी किताबें रख देने से ही उन्हें संतोष नहीं हुआ। उन की अभिलाषा थी कि उनके विद्यार्थी शारीरिक तथा मानसिक दृष्टि से इतने मजबूत बन जाए कि वे जो कुछ पढ़े उसे भरसक अपने जीवन में ला सके। इसी उद्देश्य से वे गुरुकुल में ऐसा जीवन बिताते थे जो उनके विद्यार्थियों के लिए एक आदर्श कायम कर सकता था वर्तमान शिक्षकों और प्राचीन आचार्यों में अन्तर इसी बात का है। प्राचीन काल के मां बाप अपने बच्चों को किसी स्कूल मास्टर या प्रोफेसर के पास नहीं भेजते थे, वह उन्हें आचार्य के पास भेजते थे। आचार्य उसी को कहते थे जो अपने शिष्यों को आचार की शिक्षा दें और स्वयं उस शिक्षा का आदर्श रूप बनकर उनके बीच में रह सके। महात्मा मुंशीराम सचमुच एक महान आचार्य थे। वह हमारे देश के एक महान शिक्षाविज्ञ थे।

उनसे मिलने का मुझे एक और शुभ अवसर भी प्राप्त हुआ परंतु इस बार गुरुकुल में नहीं शांतिनिकेतन में इस समय वह सन्यास आश्रम धारण करके स्वामी श्रद्धानंद बन गए थे। वह बंगाल से आए थे अच्छा अवसर देख कर हम लोगों ने उन्हें शांतिनिकेतन में निमंत्रित किया। उन्होंने वह निमंत्रण सहर्ष स्वीकार कर लिया और यहां आने की कृपा की। शांति निकेतन के संपूर्ण विद्यार्थियों और प्रोफेसरों ने गुरुकुल कांगड़ी के इस महान संस्थापक का बड़े उत्साह के साथ स्वागत किया। वह वहां कुछ दिनों तक ठहरे। हमारे प्राचीन कला भवन में जहां आजकल शांति निकेतन का कॉलेज आश्रम है। उनके स्वागत में एक सभा की गई और श्री स्वामी जी से प्रार्थना की गई कि वह भारतवर्ष की शिक्षा प्रणाली पर व्याख्यान दें। उन्होंने इस व्याख्यान में बताया कि किन बातों ने उन्हें गुरुकुल खोलने के लिए प्रेरित किया उनके मार्ग में कौन–कौन सी कठिनाइयां आईं और उन्हें उन्होंने किस तरह दूर किया। उन्होंने यह भी बताया कि इस दिशा में उनका उद्देश्य क्या है और गुरुकुल को वह क्या रूप देना चाहते हैं। उनके इस व्याख्यान का हम लोगों पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा।

स्वामी श्रद्धानंद एक ऐसे पुरुष थे जिन्हें **'यथावादी तथाकारी'** कहा जा सकता है। अपनी मातृभूमि से सब तरह की बुराइयों का नाश करने में वह एक योद्धा थे। वास्तव में उन्होंने अपना सभी कुछ होम कर अन्त में मातृभूमि की सेवा के लिए अपना जीवन भी समर्पित कर दिया। अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए उन्होंने अपने जीवन का भी मोह नहीं किया।

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द संन्यासी

– पं. नन्दलाल निर्भय

स्वामी श्रद्धानन्द थे, ईश्वर भक्त महान।
मानवता के पुंज थे, देश भक्त बलवान।।
देश भक्त बलवान, धन्य था उनका जीवन।
गाते हैं यशगान, प्रेम से उनके सज्जन।।
देश धर्म के लिए, कष्ट झेले थे भारी।
दुष्टों से ना डरे, कभी भी वे बलधारी।।

भारत में था उस समय अंग्रेजों का राज।
होता था अन्याय तब, था तब दुखी समाज।।
था सब दुखी समाज, विवश थे सब नर–नारी।
आतंकित थी यहां, देश की जनता सारी।।
आजादी की मांग, अगर कोई करता था।
देशभक्त बलवान, वीर निश्चित मरता था।।

वेद विरोधी सब जगह, होता था प्रचार।
विधर्मियों की मदद तक, करती थी सरकार।।
करती थी सरकार, हजारों हिन्दू भाई।
बन जाते थे पुत्र, राम के, यवन ईसाई।।
प्रतिदिन प्रातःकाल, गौमाता बेचारी।
बिना खता निर्दोष, यहाँ जाती थी मारी।।

स्वामी श्रद्धानन्द ने, जब देखा ये हाल।
दशा भयानक देखकर, उनको हुआ मलाल।।
उनको हुआ मलाल, ठोस फिर कदम उठाया।
आजादी का महावीर ने, बिगुल बजाया।।
नहीं मौत से डरा, निराला था वह स्वामी।
सच्चाई का रहा, सदा ही सच्चा हामी।।

आया दिल्ली नगर में, जिस दम रौलट एक्ट।
कूद पड़े मैदान में, नेता थे परफैक्ट।।
नेता थे परफैक्ट, गजब का जोश दिखाया।
एक विशाल जुलूस, निकाला जग चकराया।।
संगीनों के सुनों, सामने तानी छाती।
आगे से हट गये, सभी गोरे उत्पाती।।

खोला गुरुकुल कांगड़ी, भारी किया कमाल।
जग में कायम कर गये, स्वामी एक मिसाल।।
स्वामी एक मिसाल, देश को बचा लिया था।
अपना सब कुछ देश, धर्म पर वार दिया था।।
इन्द्र और हरीशचन्द्र, पुत्र अपने दो प्यारे।
स्वामी जी ने देश–धर्म पर, दोनों थे बारे।।

शुद्धि चक्र ले हाथ में, स्वामी श्रद्धानन्द।
विधर्मियों से भिड़ गये, नेता दानिशमन्द।।
नेता दानिशमन्द, घोर संग्राम मचाया।
पापी घबरा गये, खलों ने पाप कमाया।।
पापी अब्दुल रशीद, दुष्ट था अत्याचारी।
खल ने धोखा किया, संत को गोली मारी।।

देश धर्म पर हो गये, स्वामी जी कुर्बान।
आर्य कुमारों देश का, करो अरे कुछ ध्यान।।
करो अरे कुछ ध्यान, फूट पापिन को त्यागो।
करो परस्पर मेल, आर्यों अब तो जागो।।
करो वेद प्रचार, जगत को आर्य बनाओ।
नन्दलाल अब काम, अरे अच्छे कर जाओ।।

स्वामी श्रद्धानन्द के, मत भूलो उपकार।
भारत को फिर दो बना, दुनिया का सरदार।।

– ग्राम व पो.–बहीन, जनपद–पलवल, हरियाणा,
मो.:–9813845774

एक उद्‌बोधन
आर्य युवकों! नेता नहीं, सेवक बनो

– स्वामी श्रद्धानन्द

7 अक्टूबर 1913 को दिल्ली में अखिल भारतीय कुमार सम्मेलन का चौथा अधिवेशन हुआ था जिसकी अध्यक्षता महात्मा मुंशीराम जी ने की थी। इस अधिवेशन में महात्मा जी ने आर्य युवकों को संबोधित करते हुए जो ओजस्वी व्याख्यान दिया था वह ना केवल आर्य युवकों के लिए वरन संपूर्ण युवक समुदाय एवं देशवासियों के लिए आज भी उतना ही उद्‌बोधक एवं प्रेरक है जितना कि उस समय था। अतः उस व्याख्यान के कुछ अंश यहां प्रस्तुत है।

जाति की भविष्यत् आशाओं! आज मुझे आपने जो सेवा का अवसर दिया है, उसके लिए आपका अत्यन्त धन्यवाद करता हूं। एक कवि के अनुसार मुझे कहना पड़ता है – 'न हि विद्या न हि बाहु न हि खर्चन को दाम' अर्थात् न मुझमें विद्या है, न बाहु बल है, न धन बल है। तब भी आपने मुझे सभापति क्यों बनाया है? आशाओं से भरे नवयुवकों के समाज में एक नवयुवक सभापति अधिक अनुकूल होता। इस समय मुझे 25 वर्ष की पुरानी एक घटना याद आती है। 25 वर्ष हुए मैंने सद्धर्म प्रचारक निकाला था। उस समय मेरी आयु 32 वर्ष की थी। उस समय जो लोग मुझे मिलने आते थे वह आश्चर्यचकित होते थे। वे कहा करते थे कि आपके लेखों को पढ़कर हम आपको वृद्ध समझते थे। परंतु आप अभी नौजवान हैं। आज मेरे बाल श्वेत हो गए हैं, तथापि आर्य समाज के वृद्ध सेवकों में, काम करते हुए नेताओं में, नवयुवकों में नवयुवक हृदय से अधिक मैं अपने हृदय को नवयुवक पाता हूं। चाहे आप इसे अभिमान समझें, पर मैं इस एक अभिमान का दोष अपने सिर पर लेने को तैयार हूं। मुझे हर्ष है कि युवक सम्मेलन का सभापति बनाकर आपने मेरे इसी गुण पर ठप्पा लगा दिया है। दूसरा कारण मुझे यह प्रतीत होता है कि मैंने पिछले 12 वर्षों में 6 वर्ष से लेकर 25 वर्ष तक के युवकों के हृदयों में उतराव चढ़ाव देखे हैं।

आपने जो काम मुझे सौंपा है वह बड़ा कठिन है। बूढ़े अनुभवियों के सामने बात करना सुलभ है, परंतु युवकों को मार्ग दिखाना बड़ा कठिन है। भूल होने पर बूढ़े अनुभवी अपने अनुभव से ठोकरों से बच सकते हैं और अपने पथ रक्षक को भी रास्ता दिखा सकते हैं। परंतु जहां उत्साह के साथ हृदय की सरलता मिली हो, वहां मार्गदर्शक की उत्तरदायिता बहुत बढ़ जाती है मार्ग दिखलाने में यदि एक भी भूल हो गई यदि उनमें एक भी दाग लग गया तो बड़ी हानि हो सकती है। परंतु मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि मैं आपकी सेवा सच्चे दिल से करूंगा।

आप पूछ सकते हैं कि मैं आपको आज क्या संदेश देने आया हूं? मैं आपको क्या संदेश दे सकता हूं, हां मेरे हृदय में जो भाव हैं उन्हें मैं आपके सम्मुख रखना चाहता हूं। जिस ओर आशाएं होती है, उसी ओर हृदय का स्रोत बढ़ता है। बूढ़े अपना काम कर चुके अब आप ही हमारी भविष्यत् आशाएं हैं। एक बार जर्मनी का एक सम्राट अपने मंत्री के साथ घूमने जा रहा था। सम्राट ने एक बालक को टोपी उतार कर सलाम किया। वजीर के पूछने पर सम्राट ने कहा कि तुझे सलाम क्या करूं, तूने जो कुछ बनना था सो बन चुका। तू मेरे वजीर होने से और कुछ अधिक नहीं हो सकता। इस बालक में न जाने क्या क्या भरा है इसलिए मैंने इसे सलाम किया है। कौन जानता था कि कार्सिका की गली में खेलने वाला एक बालक सारे देश के सम्राटों का अधिपति होगा और संसार को हिला देगा। कौन कह सकता है कि आपके अंदर कौन सी शक्तियां विलीन पड़ी हैं अब हमारी आशाओं के केंद्र आप ही हैं।

किसी काम को छोटा न समझे

सबसे पहला मेरा यह निवेदन है कि नवयुवकों को कोई भी काम छोटा न समझना चाहिए। शिखर पर पहुंचने के लिए पहली सीढ़ी पर चढ़ना जरूरी है। एक बार अमेरिका के उम्मीदवार प्रधान की ओर इशारा करके एक अमेरिकन ने ताने के तौर पर कहा था तुम्हारे नाम वाला एक लड़का मेरे बूट सिया करता था क्या तुम्हारा उसके साथ कोई संबंध है। उम्मीदवार प्रधान ने अभिमान से कहा हां महाराज मैं ही वह लड़का हूं। जूते गांठने के साथ मैं बूट पालिश भी किया करता था। परंतु जाकर पूछो, जिसने मुझसे एक बार जूता

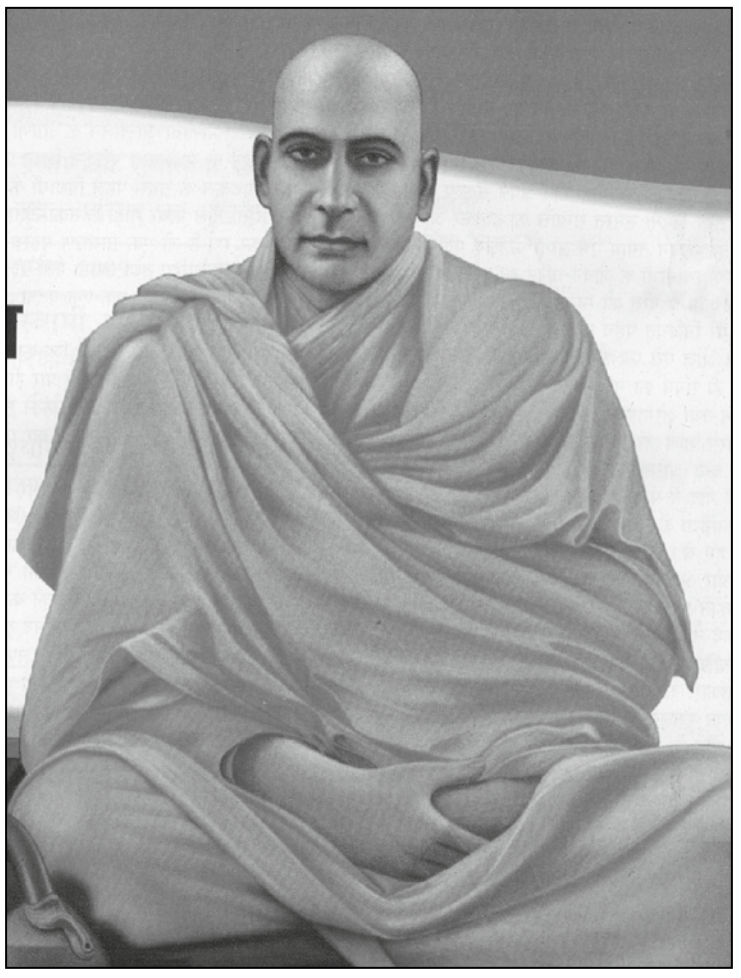

गंठवाया, उसे दूसरी जगह जाने की आवश्यकता न पड़ी। महाशय, जिस इमानदारी से मैं जूते गांठा करता था उसी इमानदारी से आपके देश का राज्य करूंगा। प्यारे युवकों! हमारे देश को इस समय ऐसे कार्यकर्ताओं की जरूरत है जो छोटे से छोटे काम करने के लिए तैयार हों। और मेरा विश्वास है कि वही कार्यकर्ता बड़े काम कर सकेंगे।

दूसरा संदेशा जो मैं आप तक पहुंचाना चाहता हूं वह उपनिषदों के शब्दों में नहीं पहुंचाया जा सकता कई महानुभावों का मत है कि उपनिषदें इन लड़कों के हाथ में न देनी चाहिए उनकी प्रतिष्ठा करते हुए भी मुझे उनसे मतभेद प्रकट करना पड़ता है मेरी सम्मति में उपनिषदें लड़कों के लिए बड़ा लाभदायक स्वाध्याय हैं। कई लोग योग को भी लड़कों के लिए खतरनाक समझते हैं। मैं कहता हूं कि यदि माता के गले से लिपटना खतरनाक है तो योग भी खतरनाक है। युवावस्था में ही धर्मशील बनो, कौन जानता है कि इसी समय मृत्यु हो जाए। बालक वृद्ध युवा सबको इसी समय धर्म में लग जाना चाहिए। मुझे निश्चय है कि आर्य युवक केवल रोटी के लिए नहीं पढ़ रहे हैं मैं समझता हूं कि वे अपने हृदय के अंधकार को दूर करने के लिए पढ़ रहे हैं। अशान्तावस्था शांतस्वरूप के दर्शन के बिना कभी दूर नहीं हो सकती। मैं चाहता हूं कि उपनिषद का निम्नलिखित वाक्य प्रत्येक युवक के हृदय पर अंकित हो –

सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येष आत्मा।
सम्यग्ज्ञानेन ब्रह्मचर्येण नित्यम्।।

यह आत्मा सत्य से मिलता है, सत्य तप से मिलता है सम्यक ज्ञान के बिना कठिन और ब्रह्मचर्य के बिना सम्यक ज्ञान असंभव है। ब्रह्मचर्य सब धर्मों का मूल है इसलिए प्यारे युवकों उस ब्रह्मचर्य का पालन यत्न से करो।

सेवक बनने का यत्न करो

अंत में मैं आपसे एक निवेदन करना चाहता हूं कि मैं उपदेश नहीं देता, क्योंकि मैं उपदेश देने की योग्य नहीं हूं, हम वृद्ध आपको किस मुंह से उपदेश दें, बूढ़ों का यह कहना था कि वे आर्य धर्म रूपी फुलवारी की रक्षा के लिए कांटे बन जाते और शत्रुओं से इसकी रक्षा करते। परंतु कहते शोक होता है कि हमने कांटे बनकर रक्षा करने की जगह एक दूसरे को चुभना आरंभ कर दिया। नवयुवकों, हम अपने कर्तव्यों से च्युत हुए हैं, तुम इस फुलवाड़ी के ऐसे फूल बनो जिसकी महक से सारी फुलवाड़ी महक जावे। मत देखो कि मुंशीराम या तुलसीराम क्या करता है। सेवक बनने का यत्न करो, क्योंकि लीडरों की अपेक्षा आर्य जाति को सेवकों की अधिक आवश्यकता है। जब कभी आपका पैर डगमगाने लगे तो राम के सेवक हनुमान का स्मरण कर लिया करो। लंका की विजय करके महाराजा रामचंद्र अयोध्या लौटे। राजगद्दी के मिलने के पीछे विभीषण, अंगद आदि सभी विदा होने लगे। उस समय माता सीता ने सभी को कुछ पुरस्कार दिया। सीता का हनुमान के साथ सबसे अधिक प्रेम था। माता ने अपना मोतियों का बहुमूल्य हार हनुमान को दिया। हनुमान ने हार लेकर एक–एक मोती को तोड़ना आरंभ किया। सीता के पूछने पर हनुमान ने कहा – 'माता, मैं देखता था कि इन मोतियों के अंदर राम का भी नाम है या नहीं, राम के नाम के बिना मैं इन मोतियों का क्या करूं?' नवयुवकों! मैं पूछता हूँ, क्या तुममें से कोई भी दयानन्द रूपी राम का पायक हनुमान बनने का यत्न न करेगा, महावीर के बिना दयानंद का काम अधूरा पड़ा है। मुझे पूरी आशा है कि दयानंद के काम को पूरा करने के लिए, पाप की लंका का विध्वंस करने के लिए तुम्हीं में से महावीर निकलेंगे।'

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' पुस्तक अवश्य पढ़ें

– लेखक स्व. पं. चमूपति एम. ए.

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' नामक पुस्तक पृष्ठ संख्या–256, अच्छे जिल्द एवं कागज में छपकर तैयार है। जिसकी कीमत 100/: रुपये है, जिस पर 25 प्रतिशत छूट उपलब्ध है। परन्तु भेजने में डाक व्यय खर्च होता है। अतः एक पुस्तक मंगाने के लिए डाक व्यय सहित 100/– रुपये भेजकर मंगा सकते हैं।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

दूरभाष :–011–23274771, 23260985

महर्षि दयानंद के सच्चे सेनानी : स्वामी श्रद्धानंद

– श्री धर्मदेव विद्यावाचस्पति

असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्माऽमृतं गमय।।

महात्मा बुद्ध ने चार प्रकार के मनुष्य बताए हैं – तमः–तमः प्रधान (जन्म से मृत्यु पर्यंत अंधकार में डूबते हुए मनुष्य), ज्योतिः – ज्योतिः प्रधान' (जन्म से मृत्यु पर्यंत विवेकमय शुभ्र जीवन व्यतीत करने वाले पुरुष), 'ज्योतिः – तमः प्रधान' तमः – ज्योति प्रधान। (पवित्र कुल में जन्म लेकर विषयी जीवन में आसक्त हो जाने वाले पुरुष)' अमर शहीद स्वामी श्रद्धानंद महाराज को हम चतुर्थ श्रेणी के पुरुष कह सकते हैं। अपनी आत्मकथा (कल्याण मार्ग का पथिक) में उन्होंने स्वयं इस सच्चाई को निःसंकोच भाव से स्पष्ट शब्दों में प्रकट किया है। अपने आरंभिक जीवन में सामान्य मनुष्य के समान वह मद्य, मांस मदिरा आदि व्यसनों में डूबे रहे। परंतु बरेली में महर्षि दयानंद सरस्वती के अल्पकालिक संपर्क से जो ज्ञान की ज्योति प्रचंड रूप से अंतःकरण में प्रविष्ट हो गई थी, वही ज्योति कालांतर में उज्ज्वलतर प्रकाश पुंज का रूप धारण करती गई, जिससे वह प्रेय मार्ग के गर्त से निकलकर श्रेय मार्ग के (कल्याण मार्ग) पथिक बन गये। 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' – उनकी यह लालसा पूर्ण हुई। वह न केवल स्वयं एक उज्ज्वल रत्न बन गए, प्रत्युत एक विशाल प्रकाश स्तंभ भी सिद्ध हुए। अपने आचार्य महर्षि दयानंद सरस्वती के जीवन व उपदेशों पर गहन दृष्टि डालते हुए उसे अपने जीवन में उतारने का सतत प्रयत्न किया। आर्य समाज में प्रविष्ट होने के बाद लाहौर की आर्य समाज में उनका जो सर्वप्रथम प्रवचन हुआ उसमें उन्होंने इसी बात पर विशेष बल दिया कि अपने को आचार्य ऋषि दयानंद का शिष्य या अनुयायी कहने वाले हम सब व्यक्तियों का यह कर्तव्य है कि हम केवल ऋषि के गुणगान करके ही अपने को कृतार्थ न समझें, प्रत्युत उनकी शिक्षाओं व विचारों के अनुरूप अपना जीवन बनाएं और हिंदू समाज को ऋषि के विचारों में दीक्षित करने का व्रत लें। इसके लिए केवल खंडन–मंडन या बौद्धिक तक का सहारा ना लें, प्रत्युत अपने व्यक्तिगत जीवन में और समाज में ऋषि की शिक्षाओं को साक्षात जीवन्त रूप प्रदान करें। इसी भावना से उन्होंने अपने जीवन में क्रांति लाने का दृढ़ संकल्प किया और आर्यजाति में विद्यमान धार्मिक अंधविश्वासों तथा सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से पंजाब में योजनाबद्ध प्रचार कार्य किया। अस्पृश्यता निवारण, जात–पांत खंडन, नारी शिक्षा, अनाथालयों व विधवाश्रमों का स्थापन और समाज सुधार कार्यों को जन्म दिया। उन्हीं के प्रयासों के फलस्वरूप इन सुधार कार्यों में पंजाब प्रदेश भारत के अन्य सभी प्रदेशों का सिरमौर रहा है।

इसके अतिरिक्त गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को इस युग में पुनः प्रचलित करने के विचार में भी ऋषि दयानंद की शिक्षाओं को साकार रूप देने की भावना ही काम कर रही थी। अत्यंत विरोध व बाधाएं उपस्थित होने पर भी उन्होंने सन् 1902 में गंगापार गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना करके अपने पवित्र संकल्प को पूरा कर दिखाया और तब तक अपने घर में कदम नहीं रखा जब तक वह संकल्प पूरा नहीं हो गया। जब तक दम में दम है, मनुष्य को वेदम नहीं होना चाहिए' – इस अपने वचन को पूरा कर दिखाया।

ऋषि के अमर ग्रंथ 'सत्यार्थप्रकाश' के अध्ययन से उनके मन में यह विचार वद्धमूल हो गया था कि निस्तेज तथा हीन–दीन दशा से पीड़ित हिंदू समाज का उद्धार तब तक संभव नहीं जब तक प्राचीन वैदिक मर्यादा के अनुसार मनुष्य का बाल्यकाल नगरों के दूषित वातावरण से दूर रहकर तपस्या ब्रह्मचर्य स्वाध्याय व साधना का जीवन ना बन जाए। इसी विचार से गुरुकुल कांगड़ी में ब्रह्मचर्य आश्रम की स्थापना करते हुए उन्होंने अपने आप को भी उसी प्रकार की दिनचर्या में ढाला। वह नित्य प्रातः काल 4:00 बजे उठकर स्नान संध्या हवन एवं वेदभाष्य तथा उपनिषदों का स्वाध्याय करके गुरुकुल के सब विभागों का नियम पूर्वक निरीक्षण करते छोटे बड़े सभी का कुशल मंगल पूछते कोई सेवक भी यदि रोगी हो जाता तो उसके घर जाकर हाल–चाल पूछते थे। सभी कर्मचारी उन्हें पिता के समान मानते थे। उनके श्री मुख से निकले मधुर वचन व आशीर्वाद के लिए लालायित रहते थे उनके लिए माता पिता दोनों ही थे उनके हृदय में सबके लिए स्नेह का स्रोत बहता रहता था।

गुरुकुल में इस आदर्शोन्मुख तपोमय जीवन से उनका व्यक्तित्व उत्तरोत्तर निखरने लगा और तन–मन–धन से गुरुकुल की साधना के फलस्वरूप गुरुकुल कांगड़ी की ख्याति देश–विदेश में फैलने लगी। आर्य जगत को अपने पर गर्व अनुभव होने लगा। इस ख्याति के कारण ना केवल उत्तर प्रदेश के गवर्नर मेस्टन तथा भारत के तत्कालीन

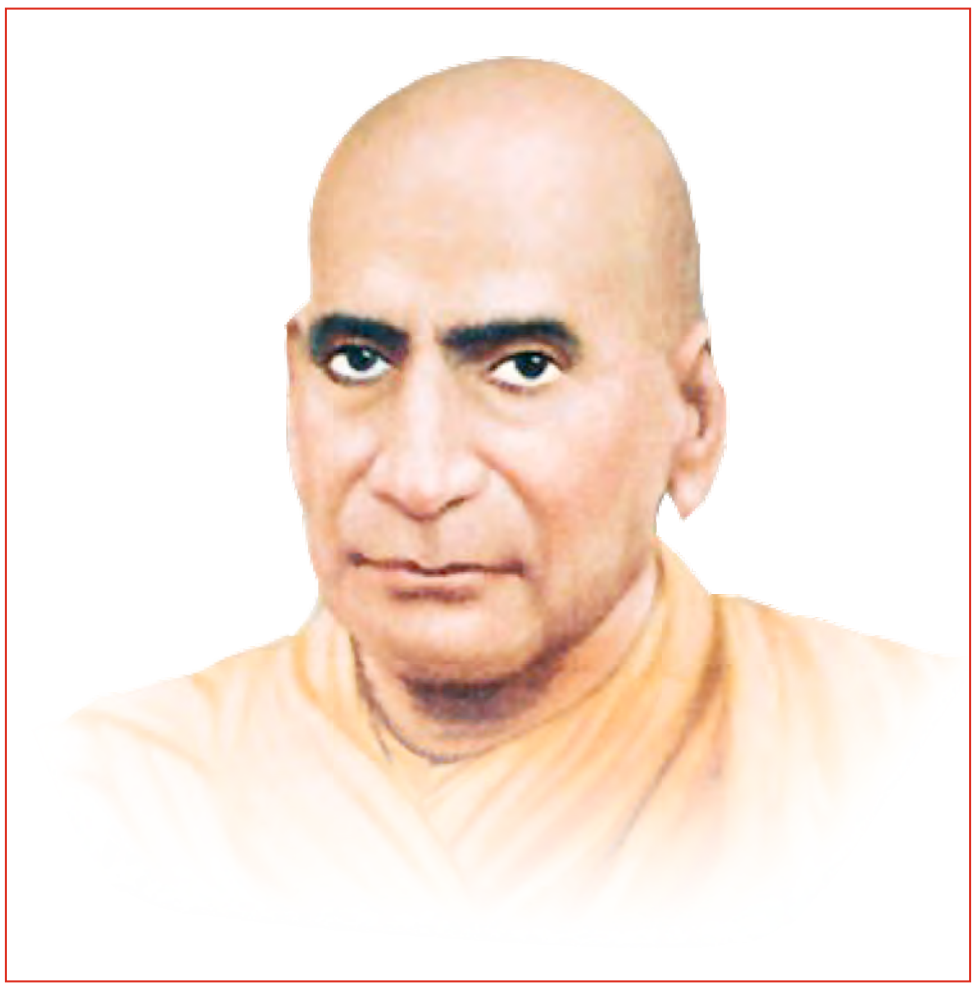

वायसराय गुरुकुल देखने के लिए लालायित हुए, प्रत्युत विदेशों से आए विद्वान् तथा राजनैतिक पुरुष भी गुरुकुल का दर्शन किए बिना अपनी भारत यात्रा को अधूरा समझते थे। महात्मा गांधी ने भी दक्षिण अफ्रीका से भारत में आपने से पूर्व अपने आश्रम के छात्रों को कुछ मास गुरुकुल में स्वामी जी की छत्रछाया में रखना उपयुक्त समझा।

इस तपोनिष्ठ साधना ने उन्हें एक दिव्य पुरुष का रूप प्रदान किया। ब्रिटिश पार्लियामेंट के सदस्य श्री रैम्जे मैकडोनाल्ड जो बाद में इंग्लैंड के प्रधानमंत्री बने, ने उस प्रांशु–काय भव्य मूर्ति महात्मा मुंशीराम में (जो बाद में स्वामी श्रद्धानंद के नाम से विख्यात हुए) साक्षात् ईसा मसीह तथा मध्यकालीन सेंटपीटर की प्रतिकृति के दर्शन किए।

हम कुलवासियों के लिए उनके उपदेश और अपने मध्य उपस्थिति मात्र भी प्रेरणाप्रद होते थे। ऐसे अनेक प्रसंग आज भी आंखों के सामने मूर्त रूप हैं। कुलवंदना और कुलगीत, जो विविध प्रसंगों में गाये जाने की परिपाटी मात्र प्रतीत होते थे, स्वामी जी के अपने मध्य उपस्थित होने पर उनका एक–एक शब्द संदेशवाहक बन कर कान में गूंजने लगता था। तब हम अपने आपको एक दिव्य स्थिति में अनुभव करने लगते थे। उनकी इच्छा का संकेत भी मिल जाए तो विद्यार्थी बड़े से बड़े श्रमसाध्य कार्य में भी प्रसन्नतापूर्वक जुट जाते थे। उनके चरण छूने, उपदेश सुनने व आदेश पाने में एक मधुर सुख की अनुभूति होती थी। मथुरा शताब्दी में उनके संकेत पाते ही हम सब तुरंत पंडाल में स्वयं सेवक बनकर तैनात हो गए।

हम बालक ही नहीं संपूर्ण आर्य जनता उन का आदेश पाने तथा चरण स्पर्श करने के लिए लालायित रहती थी। समाज सुधार, दुर्भिक्ष सहायता कार्य, शुद्धि आंदोलन, अमृतसर कांग्रेस का अधिवेशन, दिल्ली का स्वराज आंदोलन आदि सभी प्रसंगों पर स्वामी श्रद्धानंद जी की अपील ने आर्य समाज व राष्ट्र में अपूर्व उत्साह का संचार करके एक प्रबल आंदोलन को जन्म दिया। उस समय की सरकार तथा नेता भी इस तथ्य को भलीभांति अनुभव करते थे।

मुझे 1924 का वह वार्षिकोत्सव पूरी तरह स्मरण है जब आगरा शुद्धि आंदोलन के लिए स्वामी जी की अपील पर जनता ने दान की होड़ लगा दी थी और माताओं ने अपने हाथ के कंगन तथा अन्य आभूषण उतार कर दान करना आरंभ कर दिया था, जिसे देख कर बाद में स्वामी जी को कारणवश इस प्रभाव को रोकना पड़ा।

इस महान व्यक्तित्व के पीछे उनके कुछ विशेष गुण थे जिन्होंने उन्हें राष्ट्र का एक शीर्षस्थ नेतृत्व का रूप प्रदान किया। वे थे ईश्वर पर अटूट विश्वास, कथनी करनी में एकरूपता, निर्भयता साहस और वीरता लोकहित कामना तथा अपने अभीष्ट कार्य में प्राण प्रण से जुट जाने की स्वाभाविक वृत्ति। इन गुणों के बल पर वे महान आंदोलनों में सदा सफलता प्राप्त करते रहे। **'तमसो मा ज्योतिर्गमय'** आत्मोत्थान का यह उपनिषद् वचन उनके जीवन का लक्ष्य था। उस लक्ष्य प्राप्ति में ईश्वर में अटूट विश्वास व श्रद्धा तथा सत्य के प्रति पूर्ण आस्था थे उसके साधन। **'सत्यमेव जयते नानृतम्। सत्येन पन्था विततो देवयानः'** – ये शास्त्र वचन उनकी अंतरात्मा की अनुभूति के विषय बन चुके थे। इसी कारण वह सदा स्पष्टवादी और निर्भीक बनकर सब कार्य करते रहे। इस सत्य के पालन करने के लिए व्रत निष्ठ होना परम आवश्यक है – यह बात उनके हृदय का एक–एक कण बोलता था। इसीलिए उन्हें वेद के निम्न मंत्र अत्यंत प्रिय थे। अतः वे सदा अग्निहोत्र के पश्चात इन मंत्रों का पाठ करके अपने संकल्प को दृढ़ किया करते थे। एक मंत्र था –

व्रतेन दीक्षामाप्नोति, दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति, श्रद्धया सत्यमाप्यते।। यजु. 19.30।।

दूसरा मंत्र था –

अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयम् तन्मे राध्यताम्।
इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि।। यजु. 1.5।।

आर्य समाज गुरुकुल कांगड़ी तथा स्वतंत्रता आंदोलन से सम्बद्ध सभी कार्यों में सफलता पूर्वोक्त गुणों के कारण रहीं। उनके लोक हितकारी यह कार्य सदा अनुकरणीय हैं। परंतु इन से भी अधिक अनुकरणीय हैं उनके आत्मिक उदात्त गुण जिनके कारण उनका सामाजिक जीवन उत्तरोत्तर विकसित होता गया और अंत में देश व जाति के हित में बलि हो गया और जिससे वह अमर शहीद की पदवी को प्राप्त हुए।

चाहे आजकल के राजनीतिक पुरुष उनके प्रति कृतज्ञता अनुभव न करें परंतु भारत की अंतरात्मा को समझने वाले श्री अरविंद घोष, कवीन्द्र रवीन्द्र ठाकुर गोपाल कृष्ण गोखले, महात्मा गांधी, मदन मोहन मालवीय, सरदार पटेल और बाबू राजेंद्र प्रसाद आदि महापुरुष उनके गुणों के प्रशंसक थे और उन्हें भारत का गौरव समझते थे।

अतः भारतीय संस्कृति के प्रेमी प्रत्येक आर्य बन्धु का यह कर्त्तय हो जाता है कि वह उनके गुणों, शिक्षाओं व कार्यों से प्रेरणा प्राप्त करते हुए अपने कर्त्तव्य का पालन करें।

आर्य समाज, दुर्गापुरी विस्तार का वार्षिकोत्सव

14 से 16 दिसम्बर, 2018 तक भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य अतिथि के रूप में हुए सम्मिलित

आर्य समाज, दुर्गापुरी विस्तार का वार्षिकोत्सव 14 से 16 दिसम्बर, 2018 तक एल.आई.जी. फ्लैट, स्टेज वाला पार्क, लोनी रोड, दिल्ली में बड़े उत्साह के साथ आयोजित किया गया। उत्सव में प्रातः 8.30 बजे से 11 बजे तक हवन, भजन एवं प्रवचन तथा सायं 5 बजे से 8 बजे तक भजन एवं प्रवचनों का कार्यक्रम चलता रहा। आर्य जगत की विख्यात विदुषी अंजलि आर्या यज्ञ की ब्रह्मा एवं प्रमुख वक्ता के रूप में तथा श्री घनश्याम प्रेमी भजनोपदेशक के रूप में कार्यक्रम में विशेष रूप से पधारे। सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी 15 दिसम्बर, 2018 को सायंकालीन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए और उनका प्रभावशाली प्रवचन हुआ।

इस अवसर पर अपने ओजस्वी उद्‌बोधन में स्वामी आर्यवेश जी ने उपस्थित जनसमूह को मनुर्भव की प्रेरणा देते हुए कहा कि मनुष्य को सर्वप्रथम वास्तविक मनुष्य बनना चाहिए और मनुष्य बनने के लिए यह आवश्यक है कि परस्पर घृणा, वैमनस्य और नफरत को छोड़ते हुए परहित तथा परोपकार पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। स्वामी जी ने यज्ञ करने पर बल देते हुए कहा कि यज्ञ त्याग, समर्पण और परोपकार का एक ऐसा सम्मिश्रण है जिसे करने से मनुष्य वास्तव में मनुष्य बनता है। उन्होंने कहा कि निष्काम कर्म की भावना अपने जीवन में धारण करते हुए यज्ञ के माध्यम से हम दूसरों को जीवनीशक्ति प्रदान करते हैं। जिसके कारण जल, वायु, वातावरण, शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा की शुद्धि होती है। स्वामी जी ने कहा कि वर्तमान जीवन और जगत को आर्य धर्म का चिन्तन ही सुख, शांति, प्रसन्नता, संतोष और निरोगता प्रदान कर सकता है।

उत्सव की व्यवस्था में आर्य समाज दुर्गापुरी विस्तार के संरक्षक श्री पीतम सिंह प्रियतम, श्री ईश्वर सिंह, प्रधान श्री रामपाल सिंह एडवोकेट, मंत्री श्री सत्यवीर सिंह बालियान तथा कोषाध्यक्ष श्री भुल्लन सिंह के अतिरिक्त श्री महिपाल सिंह पंवार उपप्रधान, श्री उदयवीर सिंह मान उपप्रधान, श्री पनीत सूरी सचिव, डॉ. मयनपाल सिंह सचिव, श्री रामदेव आर्य प्रचारमंत्री, श्री प्रभुनाथ सिंह प्रचार मंत्री, श्री राजेन्द्र दत्त शर्मा पुस्तकाध्यक्ष व श्री नरेन्द्र कुमार आर्य, श्री सत्येन्द्र पंवार, श्री रामकुमार आर्य प्रान्तीय प्रभारी केन्द्रीय आार्य युवक परिषद्, श्री अनिल सिंघल, श्री वीरपाल सिंह, श्री हरवीर सिंह पंवार, श्री सत्यवीर सिंह (प्रधान जी), श्री जयपाल सिंह, श्री विक्रम सिंह पंवार, श्री हीरालाल आर्य, श्री उदयवीर सिंह कालखंडे का भी सहयोग रहा। सायंकालीन सत्र में प्रिंसिपल श्रीमती सुमन राणा अध्यक्ष रहीं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमंत्री एवं राजस्थान के प्रसिद्ध आर्यनेता श्री रामसिंह आर्य की सुपुत्री

श्रीमती मनीषा पंवार जोधपुर शहर क्षेत्र से शानदार जीत प्राप्त करके विधायक चुनी गईं

उन्हें हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ

हाल ही में सम्पन्न हुए राजस्थान विधान सभा के चुनाव में जोधपुर शहर चुनाव क्षेत्र से कांग्रेस की प्रत्याशी श्रीमती मनीषा पंवार ने 20 वर्ष बाद कांग्रेस को ऐतिहासिक विजय दिलाई। गत् 20 वर्षों से जोधपुर शहर क्षेत्र से भाजपा का प्रत्याशी विजयी होता रहा, किन्तु इस चुनाव में अपनी कर्मठता, व्यवहार कुशलता, जनसम्पर्क एवं लोकप्रियता के बल पर मनीषा पंवार ने कांग्रेस को भारी मतों से विजय दिलाकर ऐतिहासिक कार्य कर दिखाया। विदित हो कि मनीषा पंवार राजस्थान के प्रसिद्ध आर्यनेता एवं सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री श्री राम सिंह आर्य जी की सुयोग्य सुपुत्री हैं और वह राजनैतिक कार्यों के अतिरिक्त आर्य समाज की समस्त गतिविधियों में अपना योगदान देती रहती हैं।

एक आर्यपुत्री की विजय से आर्यों में प्रसन्नता की लहर दौड़ रही है और सभी आशान्वित हैं कि मनीषा पंवार इसी प्रकार जीवन में उन्नति करती रहें और जनसेवा के कार्यों में अहर्निश अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती रहें। सार्वदेशिक सभा की ओर से हम उनके उज्ज्वल भविष्य और यशकीर्ति की कामना करते हैं और उन्हें इस विजय के लिए शुभकामनाएँ तथा बधाई प्रेषित करते हैं।

आर्य नेता पं. प्रकाशवीर शास्त्री जी के 95वें जयन्ती समारोह के अवसर पर स्मृति व्याख्यान का भव्य आयोजन

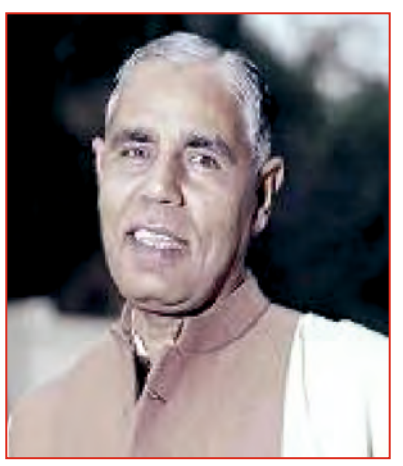

आर्य समाज के प्रखर वक्ता एवं सांसद पं. प्रकाशवीर शास्त्री जी का जयन्ती समारोह 30 दिसम्बर, 2018 को नई दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में मनाया जायेगा। इस अवसर पर एक स्मृति व्याख्यान का आयोजन किया जा रहा है जिसका विषय है ''राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता को चुनौतियाँ''। शास्त्री जी की राष्ट्र भक्ति की भावना से प्रेरित यह आयोजन किया जा रहा है।

इसमें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती, डॉ. धीरज सिंह प्रधान, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, वरिष्ठ पत्रकार डॉ. वेद प्रताप वैदिक जी, डॉ. संजय त्यागी डीन मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज, श्री अनिल त्यागी उपकुलपति इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय, श्री आनन्द चौहान जी चेयरमैन एमेटी शिक्षण संस्थान, श्री के. सी. त्यागी पूर्व सांसद, पं. माया प्रकाश त्यागी कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक सभा, श्री अनिल आर्य अध्यक्ष केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, श्री प्रदीप त्यागी जी पूर्व इन्कम टैक्स कमिश्नर्स, संविधान विशेषज्ञ श्री सुभाष कश्यप जी एवं साहित्य अकादमी भाषा पुरस्कार विजेता श्री योगेन्द्र नाथ शर्मा 'अरुण' जी सहित अनेकों गणमान्य महानुभाव उपस्थित रहेंगे।

कार्यक्रम दोपहर 2 से 4.30 बजे तक ऑडिटोरियम, इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, 40 मैक्स मूलर मार्ग, निकट लोधी गार्डन, नई दिल्ली में आयोजित हो रहा है। इसमें पधार कर कार्यक्रम को सफल बनायें। जिन आर्य महानुभावों के पास पं. प्रकाश वीर शास्त्री जी से सम्बन्धित संस्मरण एवं चित्र आदि हों वे pvshastrimemorialtrust@gmail.com इस ईमेल पर भेजने का कष्ट करें।

— शरद त्यागी, मो.:—9896187096

निर्भीक संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती

-आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री

महर्षि दयानन्द के सपनों को साकार करने वाले, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली एवं शुद्धि आंदोलन के प्रणेता, स्त्री शिक्षा आंदोलन के सूत्रधार, दलितोद्धारक, दीन अनाथ पालक, राष्ट्रीय एकता एवं राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रबल समर्थक, आत्मोन्नति के पथ प्रदर्शक, धीर-वीर संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती अपने अमर बलिदान एवं दिव्य कर्मों के द्वारा आर्यसमाज में ऋषिवर दयानन्द के बाद उन्होंने जो स्थान बनाया है, वह अन्य महापुरुष न बना सके।

निर्भीक संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द शूरता, वीरता, कर्मठता, निर्भयता, सहृदयता की साक्षात मूर्ति थे। धन्य है वे महापुरुष जो देश सेवा में दिन-रात जुड़े रहते हैं। धन्य हैं यह मातृभूमि जिसने ऐसे देश-भक्तों, समाज सुधारकों, ज्ञानियों, ऋषियों को जन्म दिया। इस पावनधरा में ही महान संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती हुए। लॉर्ड मैकाले की शिक्षा नीति को चुनौती देने वाले स्वामी श्रद्धानन्द जी ने 1902 में हिमालय की उपत्यकाओं एवं गंगा किनारे कांगड़ी नामक ग्राम के सन्निकट प्राचीन शिक्षा प्रणाली को पुनः स्थापित करने के लिए गुरुकुल की स्थापना की। वहां से निकले स्नातक पूरे विश्वपटल पर छा गए। उसका मूल कारण था स्वामी जी महाराज का आचार्यत्व।

स्वामी श्रद्धानन्द महाराज एक आदर्श संन्यासी थे। वेद में संन्यासी के लिए अनेक गुण-धर्मों का वर्णन किया गया है। वहाँ संन्यासी को मीढवान होने की बात कही है। मीढवान का अर्थ है बादल की तरह बरसने वाला होना चाहिए। जिस प्रकार बादल अपना सब कुछ जगत के कल्याण के लिए बरसा देता है उसी प्रकार संन्यासी को भी अपना सर्वस्व जनता के कल्याण के लिए बरसते रहना चाहिए। महर्षि दयानन्द के सपनों को साकार करने वाले, दलितोद्धारक स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जीवन भर उनके पास जो कुछ भी था उसे वे जनकल्याण के लिये ही बहाते रहे। उन्होंने देश और धर्म दोनों की सेवा की। गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना के उपरान्त अपने दोनों पुत्रों को गुरुकुल में प्रवेश दिलाना, अपनी सुपुत्री का विवाह जन्म-जाति को तिलांजलि देकर गुणकर्मानुसार करने का दृढ़ निश्चय, अपनी कोठी और प्रेस आदि सब कुछ बेचकर गुरुकुल के लिए दान करना। जिसने अपने जीवन का क्षण-क्षण और सम्पति का कण-कण राष्ट्र- यज्ञ में होम दिया, जिसने चांदनी चौक में गोरों की संगीनों के सामने सीना तान दिया और जामा मस्जिद के मिम्बर पर से सच्चे धर्म सद्भाव का उपदेश दिया उस कर्मयोगी और तपस्वी स्वामी श्रद्धानन्द महाराज को 'अध्यात्म पथ' पत्रिका परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि।

भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने कहा था कि स्वामी श्रद्धानन्द जी स्पष्टवादिता और निर्भीकता के मूर्तिमान स्वरूप थे भारत के आधुनिक इतिहास में स्वामी जी का स्थान प्रथम सांस्कृतिक पथ प्रदर्शक का है। जिनको स्वामी जी के साक्षात दर्शन का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ उनके लिए स्वामी जी के जीवन वृत्तान्त को पढ़ना ही मनुष्य को उन्नति के मार्ग पर अग्रसर करने वाला है। पूर्व प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरु का कथन है कि वृद्धावस्था में भी उनकी उन्नत सीधी आकृति तथा संन्यासी वेश में उच्च भव्यमूर्ति, लम्बा कद, शाहाना शकल, चमकती हुई अन्तर्भेदिनी आँखें और कभी-कभी दूसरों की निर्बलताओं पर मुख पर आ जाने वाली झुंझलाहट की झलक इस सजीव मूर्ति को मैं कैसे भूल सकता हूँ? प्रायः यह तस्वीर मेरी आँखों के सामने आ जाती है।

स्वामी श्रद्धानन्द जी की याद आते ही 1919 का दृश्य मेरी आँखों के सामने खड़ा हो जाता है। सरकारी सिपाही फायर करने की तैयारी में हैं। स्वामी जी छाती खोलकर सामने जाते हैं। और कहते हैं-लो, चलाओ गोलियां। उनकी इस वीरता पर कौन मुग्ध नहीं हो जाता? मैं चाहता हूं कि उस वीर संन्यासी का स्मरण हमारे

अन्दर सदैव वीरता और बलिदान के भावों को भरता रहे। यह उदगार है सरदार बल्लभभाई पटेल का।

बरेली में मुंशीराम को स्वामी दयानन्द जी के न केवल दर्शन का अवसर मिला प्रत्युत उसके ओजस्वी, बोधगम्य एवं तर्कसंगत भाषण सुनने का भी सुअवसर प्राप्त हुआ। विलक्षण प्रतिभा के धनी बाल ब्रह्मचारी स्वामी दयानन्द ने अपने अद्भुत पाण्डित्य और विलक्षण प्रतिभा से न केवल मुंशीराम के दिल और दिमाग पर जैसे जादू कर दिया। इसका उल्लेख अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द ने (कल्याण के मार्ग पथिक) नामक ग्रन्थ में लिखा है।

ऋषिवर! तुम्हें भौतिक शरीर त्यागे अनेक वर्ष हो चुके, परन्तु तुम्हारी दिव्य मूर्ति मेरे हृदय पट पर अब तक ज्यों की त्यों अंकित है। मेरे निर्बल हृदय के अतिरिक्त कौन मरण धर्मा मनुष्य जान सकता है कि कितनी बार गिरते- गिरते तुम्हारे स्मरणमात्र ने मेरी आत्मिक रक्षा की है। तुमने कितनी गिरी हुई आत्माओं की काया पलट दी, इसकी गणना कौन मनुष्य कर सकता है? परमात्मा के बिना, जिन की पवित्र गोद में तुम इस समय विचर रहे हो, कौन कह सकता है कि तुम्हारे उपदेशों से निकली हुई अग्नि ने संसार में प्रचलित कितने पापों को दग्ध कर दिया? परन्तु अपने विषय में मैं कह सकता हूँ कि सत्संग ने मुझे कैसे गिरी हुई अवस्था से उठाकर सच्चा जीवन लाभ करने के योग्य बनाया।

मैं तुम्हारा ऋणी हूँ, उस ऋण से मुक्त होना चाहता हूँ। इसलिए जिस परम पिता की असीम गोद में तुम परमानन्द का अनुभव कर रहे हो, उसी से प्रार्थना करता हूँ कि मुझे तुम्हारा सच्चा शिष्य बनने की शक्ति प्रदान करें।

आइये इस बलिदान दिवस पर हम शुद्धि के कार्य को और अधिक प्रभावी बनाने का संकल्प लें, छुआछुत, भेदभाव को दूर करने के लिए हम कटिबद्ध रहें। उनके प्रति वास्तविक श्रद्धांजलि यही हो सकती है कि हम उनके कार्य को जारी रखें और उनको सफल बनाऐं।

जिये तो जान लड़ाते रहे वतन के लिए
मरे तो हो गए कुरबान संगठन के लिए
ऋषिवर के पीछे हुए, श्रद्धानन्द महान।
युगों-युगों तक कर रहा, जग उनका गुणगान॥
जीवन में जो कुछ किया, श्रद्धा उसका मूल।
उत्तरार्द्ध उत्कर्ष कर, की न पुनः कुछ भूल॥
सेवा-व्रत जो है कठिन, ले उसका संकल्प।
जीवन-भर उस पर चले, सोचा नहीं विकल्प॥
दलितों का उद्धार कर, दिया उन्हें नवप्राण।
भटके जन को शुद्ध कर, विधवाओं का त्राण॥
धर्मान्तर जो कर गये, उन्हें बनाया आर्य।
जीवन का यह था मिशन, सारा जग हो आर्य॥
गुरुकुल शिक्षा के लिए, किया सभी कुछ दान।
निर्भय वेद-प्रचार कर, किया आत्म-बलिदान॥
पद छोड़े क्षण नहीं लगा, मारी उनको लात।
हिन्दी-हिन्दू के लिए, किया समर्पित गात॥
नारी शिक्षा के लिए, किये प्रयत्न हजार।
मात सुमाता बन सके, वेद पढ़े सुविचार॥
जामा मस्जिद से किया, मंत्रों का उच्चार।
वेद-ज्ञान सब के लिए, भेद-भाव बेकार॥
दान-वृत्ति भी थी प्रबल, लोभ न मन अभिमान।
वेद-विहित जीवन जिया, श्रद्धानन्द महान॥
जीवन का उद्धार कर, श्रद्धानन्द समान।
सतसंगति पारस मिले, जीवन बने महान॥

- अन्तर्राष्ट्रीय कथाकार, सम्पादक-अध्यात्म पथ
फ्लैट नं.-सी-1, पूर्ति अपार्टमेंट, एफ-ब्लाक,
विकासपुरी, नई दिल्ली-110018
मो.: 9810084806,
E-mal : acharya_chandrashekhar@yahoo.com

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमंत्री एवं राजस्थान के प्रसिद्ध आर्यनेता

श्री रामसिंह आर्य को मातृशोक

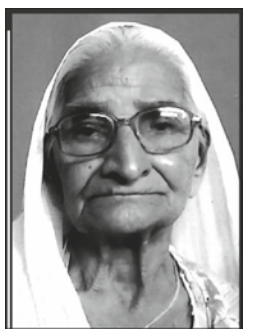

अत्यन्त दुःख के साथ सूचित किया जाता है कि राजस्थान के लोकप्रिय आर्यनेता और सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री श्री रामसिंह आर्य की पूज्या माता श्रीमती प्रेम कंवर धर्मपत्नी स्व. श्री शेर सिंह जी का दिनांक 16 दिसम्बर, 2018 को स्वर्गवास हो गया।

पूज्या माता श्रीमती प्रेम कंवर आर्य विचारों से ओत-प्रोत एक धर्मशीला नारी थीं तथा आर्य समाज के कार्यों में वे बढ़-चढ़ कर भाग लेती थीं। उन्होंने अपने सुपुत्र श्री रामसिंह आर्य जी को अत्यन्त उच्च संस्कार प्रदान किये थे जिनके बल पर वे आज राजस्थान के एक प्रतिष्ठित आर्य के रूप में जाने जाते हैं।

माता श्रीमती प्रेम कंवर के निधन के समाचार को सुनकर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने गहरा दुःख व्यक्त करते हुए इसे अपनी व्यक्तिगत क्षति बताया। उन्होंने परमपिता परमात्मा से दिवंगत की सद्गति तथा पारिवारिकजनों को इस दुःख की घड़ी में धैर्य धारण करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की।

95वीं जयन्ती पर विशेष

पं. प्रकाशवीर शास्त्री एक महान व्यक्तित्व

आर्य समाज के प्रसिद्ध नेता, संसद के ओजस्वी वक्ता संस्कृत एवं हिन्दी के प्रकाण्ड विद्वान्, स्व. पं. प्रकाशवीर शास्त्री जी का 30 दिसम्बर को 95वाँ जन्म दिवस है। उनका जन्म 30 दिसम्बर, 1923 को उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद (अब जे.पी.नगर) के नेहरा नामक गांव में हुआ था। आगरा विश्वविद्यालय से एम.ए. करने के बाद गुरुकुल वृन्दावन के उपकुलपति नियुक्त किये गये। सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय बनारस से शास्त्री की डिग्री हासिल की। देश के प्रथम शिक्षा मंत्री मौलाना अब्दुल कलाम आजाद के देहान्त के बाद 1958 के गुड़गांव उपचुनाव में जीत हासिल कर उन्होंने लोगसभा में निर्दलीय सदस्य के रूप में प्रवेश किया। 1962 में तृतीय लोकसभा के सदस्य बिजनौर, 1967 में हापुड़ गाजियाबाद संसदीय सीट से चुने गये। 1974 में उत्तर प्रदेश से जनसंघ के समर्थन से शास्त्री जी राज्यसभा के सदस्य निर्वाचित हुए।

संसद में धाराप्रवाह हिन्दी में उनके भाषणों को लोग आज भी भूले नहीं हैं। विरोधी दल की भूमिका के बारे में वह कहा करते थे, प्रजातंत्र में विरोधी दलों की भूमिका स्वस्थ निर्णय लेने में बड़ी सहायक रहती है। मात्र विरोध के लिए, विरोध की नीति बाहर से भले ही अच्छी जंचे पर उससे राष्ट्र का कोई भला नहीं हो पाता।

शास्त्री जी के अभिन्न मित्र और संसदीय जीवन के साथी श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने शास्त्री जी को अपनी श्रद्धांजलि में कहा 'स्वर्गीय श्री प्रकाशवीर शास्त्री भारतीय संस्कृति के उत्थान तथा हिन्दी एवं संस्कृत के संरक्षण के लिए प्रतिबद्ध थे वे राष्ट्रीय गौरव को क्षितिज की ऊँचाईयों तक ले जाने और राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहे। उनमें देशभक्ति एवं राष्ट्रीयता की भावना कूट–कूट कर भरी हुई थी। उन्होंने अपने लम्बे धार्मिक, राजनैतिक तथा सार्वजनिक जीवन में अपनी प्रखर राष्ट्रीय विचारधारा के कारण एक अलग पहचान बना ली थी।

संसद में उनके भाषणों को सभी दलों के नेता बड़े आदर के साथ सुनते थे, श्री अटल जी ने शास्त्री जी के जीवन पर एक पुस्तक का विमोचन करते हुए यह इच्छा व्यक्त की, कि शास्त्री जी के संसदीय भाषणों का एक संकलन निकाला जाये। सन् 2002 में शास्त्री जी के संसदीय भाषणों का संकलन एक पुस्तक 'राष्ट्रीयता के मुख्य स्वर' के रूप में श्री लाल कृष्ण आडवाणी जी ने लोकार्पण किया।

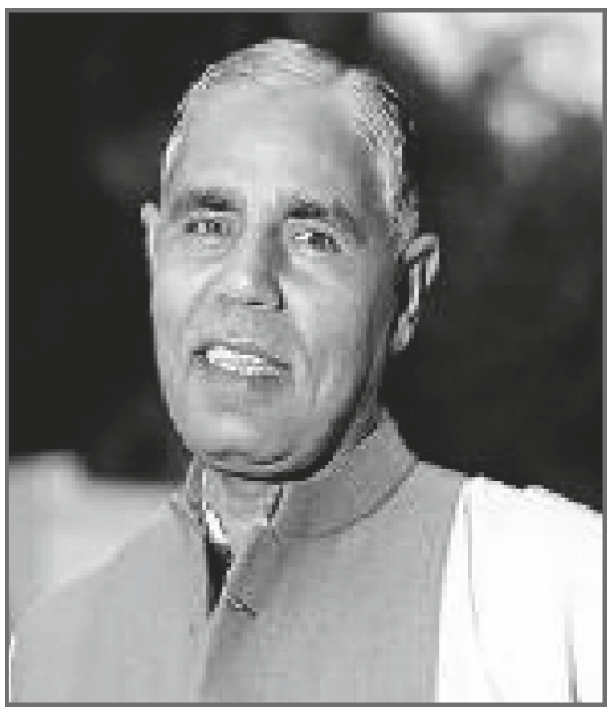

शास्त्री जी ने कुछ पुस्तकें भी लिखी जैसे 'मेरे सपनों का भारत', 'कश्मीर की वेदी पर', 'धधकता कश्मीर', 'गौहत्या या राष्ट्र हत्या' एवं 'संध्या सरोज'। शास्त्री जी ने 17 सालों तक (1960 से 1977) तक देश को एक सूत्र में पिरोने वाले लौह पुरुष सरदार पटेल की जयन्ती का दिल्ली में भव्य आयोजन करवाया। 1976 में शास्त्री जी को राष्ट्रभाषा हिन्दी और भारतीय भाषाओं के उत्थान में योगदान के लिए मंडित पुरुषोत्तम दास टंडन पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

नवम्बर, 1977 में जयपुर से वापसी दिल्ली आते हुए श्री प्रकाश वीर शास्त्री जी का हरियाणा के पास रेवाड़ी में ट्रेन दुर्घटना में देहान्त हो गया।

पंडित प्रकाशवीर शास्त्री व्याख्यानमाला–2017 संस्करण

30 दिसम्बर, 2017 को नई दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में आर्य समाज के इस प्रखर नेता की 94वीं जयन्ती समारोह के अवसर पर एक श्रद्धांजलि सभा पर व्याख्यान माला का आयोजन किया गया था।

सभा के उद्घाटन भाषण में पं. प्रकाशवीर शास्त्री स्मृति न्यास के अध्यक्ष श्री शरद त्यागी जी ने शास्त्री जी के आदर्शों का विस्तार से वर्णन किया। वरिष्ठ पत्रकार डॉ. वेद प्रताप वैदिक ने हिन्दी आन्दोलन को याद करते हुए उसमें शास्त्री जी के योगदान को याद किया तथा अपनी पी.एच.डी. हिन्दी में लिखी होने के कारण जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकार न किये जाने पर शास्त्री जी ने संसद में इसे उठा कर तीखे शब्दों में इसकी आलोचना की थी। श्री सोमपाल शास्त्री, पूर्व मंत्री भारत सरकार ने शास्त्री जी के साथ उनके आर्य समाज के क्षेत्र में उनके काम करने के अनुभव को याद किया। डॉ. सुभाष कश्यप ने लोक सभा में उनके द्वारा दिये जाने वाले धाराप्रवाह हिन्दी भाषणों को याद करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी ने अपने शास्त्री जी के साथ बिताये समय की यादें सांझा की और उनकी अभूतपूर्व संगठन शक्ति एवं विरोधी को अपनी मृदु भाषा से निस्तेज कर देने वाली वाणी के कुछ उदाहरण भी साझा किये। इस मौके पर समाज और शिक्षा जगत के विभिन्न विद्वानों ने भी सभा की शोभा बढ़ाई।

पंडित प्रकाशवीर शास्त्री स्मृति न्यास

पंडित प्रकाशवीर शास्त्री स्मृति न्यास का ध्येय राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ रखने के लिए प्रयास करना है। यह न्यास सामाजिक क्षेत्र में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक एकता को परोक्ष रूप से प्रभावित करने वाले विषयों जैसे शिक्षा की गुणवत्ता सुधार, गरीबी उन्मूलन, जातिवाद समाप्ति के प्रति भी कार्यरत रहेगा।

पंडित प्रकाशवीर शास्त्री राष्ट्रीय एवं सामाजिक मुद्दों जैसे राष्ट्रीय एकता, शिक्षा प्रणाली में सुधार, विदेश नीति, राष्ट्रीय चरित्र निर्माण जैसे विषयों पर संसद के अन्दर एवं बाहर चेतना जगाते रहे। इन्हीं विषयों पर आज के समयानुसार चिन्तन कर सामाजिक एवं राजनीतिक एक राय बनाकर कुछ ठोस कदम उठाने हेतु शास्त्री जी के जन्म दिवस तो एक व्याख्यानमाला के रूप में आयोजित किया जा रहा है। इसी कड़ी में इसके दूसरे संस्करण का आयोजन 30 दिसम्बर, 2018 को दिल्ली में आयोजित किया जा रहा है।

हल्दी : रक्खे हेल्दी

– डॉ. विभा सिंह

हल्दी धार्मिक दृष्टि से पवित्र एवं शुभ मानी जाती है तथा प्रत्येक घर में सब्जियों में भी इसका प्रयोग होता है। इसके अनेक औषधीय गुण हैं जो हमारे लिए स्वास्थ्यवर्धक हैं। हल्दी स्वभाव में तिक्त, रूक्ष, कफ, पित्त, त्वचा के दोष, रक्तदोष, सूजन, मधुमेह एवं व्रण को दूर कर, राहत पहुँचाने वाली है। आयुर्वेद की अनेक औषधियों के निर्माण में हल्दी का प्रयोग होता है। आयुर्वेदिक तेल, घृत, आसव आरिष्टों एवं चूर्णों में हल्दी का प्रयोग किया जाता है। पारद संहिता में हल्दी के कल्प का वर्णन किया गया है। हल्दी के प्रमुख औषधीय गुण इस प्रकार हैं :–

चोट व घाव पर : यदि शरीर के किसी भी भाग में चोट लग गई हो और वहाँ सूजन आ गई हो, तो हल्दी पीसकर एवं उसमें चूना मिलाकर उस स्थान पर लेप करना चाहिए। यदि चोट भीतरी हो, तो गाय के गुनगुने दूध में हल्दी का चूर्ण मिलाकर पिलाना चाहिए। ऐसा करने से दर्द कम हो जाता है और यदि घाव हो गया हो, तो इसका लेप लगाने से घाव के कीड़े नष्ट हो जाते हैं। इस तरह यह कीट नाशक भी हैं। व्रण पर इसका चूर्ण रखने से घाव शीघ्र भर जाता है। यदि फोड़ा फूटा हुआ न हो, तो अलसी के पुल्टिस में हल्दी मिलाकर फोड़े पर बांधने से फोड़ा जल्दी पककर फूट जाता है एवं मवाद बाहर आ जाता है और घाव जल्दी ही ठीक हो जाता है।

एलर्जी में लाभदायक :– हल्दी का प्रयोग चर्म रोग, जुकाम एवं श्वास की एलर्जी में भी लाभदायक होता है।

खांसी में लाभदायक :– हल्दी व आमी हल्दी दो माशा, इन दोनों को पानी के साथ पीसकर मटर के दाने के बराबर गोलियाँ बनाकर सुबह एवं शाम जल के साथ सेवन करने से खांसी में आराम मिलता है। यदि खांसी सूखी हो तो गर्म दूध में हल्दी का एक चम्मच चूर्ण मिलाकर पीने से कफ बाहर आ जाता है। सूखी खांसी में शहद के साथ भी हल्दी का सेवन उपयोगी होता है। इनकी गोलियाँ बना लेनी चाहिए एवं जब खांसी आये तो मुंह में रखकर चूसना चाहिए, इससे खांसी का वेग कम हो जाता है।

नेत्र रोग में उपयोगी :– आँख सम्बन्धी बीमारियों में हल्दी विशेष उपयोगी होती है। यदि आँख लाल हो गई हो तो आंखों पर हल्दी का लेप करने से लालिमा समाप्त हो जाती है। हल्दी को महीन पीसकर कपड़े से छान लेना चाहिए। रात को सोते वक्त सलाई से आंखों में लगाना चाहिए। ऐसा करने से आंख की ज्योति बढ़ती है।

उदर गैस में लाभदायक :– यदि पेट में गैस बन रही हो

तो पिसी हुई हल्दी 10 रत्ती एवं इतनी ही मात्रा में काला नमक मिलाकर गर्म जल के साथ सेवन करने से तत्काल लाभ पहुँचता है।

दंत रोग में उपयोगी :– यदि दाँत में दर्द होता हो या अन्य विकार हो, तो हल्दी का मंजन विशेष उपयोगी होता है। मंजन बनाने हेतु हल्दी की गांठ को धीमी आंच पर भूनना चाहिए और भूनकर इसे बारीक पीसकर कपड़े से छान लेना चाहिए। इसमें थोड़ा सेंधा नमक मिलाकर शीशी में भर लें एवं प्रतिदिन प्रातः काल तथा सायं खाने से पूर्व इसका मंजन करना चाहिए।

कर्ण रोग में उपयोगी :– कान बहने, दर्द, पीव या मवाद होने पर हल्दी का प्रयोग विशेष लाभकारी होता है। कान की तकलीफ होने पर हल्दी को उसकी मात्रा में दोगुने पानी में महीन पीसकर छान लेना चाहिए। इसकी बराबर मात्रा में तिल का तेल मिलाकर धीमी आंच पर पकाना चाहिए। कान सम्बन्धी तकलीफ हो तो गुनगुना करके दो–तीन बूंदें कान में डालें।

मुख सम्बन्धी रोगों में भी लाभदायक :– मुख सम्बन्धी तकलीफ तथा हलक, तालू एवं मुंह में छाले पड़ जाने की स्थिति में या गले में गिल्टियाँ निकल आने की स्थिति में हल्दी का सेवन उपयोगी होता है। मुंह में छाले होने पर एक तोला हल्दी को कूट–पीसकर एक लीटर पानी में उबालना चाहिए एवं सुबह–शाम कुल्ला करना चाहिए। ऐसा करने से मुख के अन्दर के छाले ठीक हो जाते हैं तथा जलन समाप्त हो जाती है।

यदि गले में गिल्टियाँ निकल आई हों तो हल्दी को महीन पीसकर छः माशा की मात्रा में सुबह जल के साथ सेवन करना चाहिए। साथ ही साथ हल्दी को पानी में पीसकर हल्का गर्म करके गले पर लेप करना भी लाभदायक होता है।

सौंदर्य प्रसाधन :– सौंदर्य प्रसाधन के रूप में भी हल्दी का विशेष उपयोग किया जाता है। अनेक आयुर्वेदिक क्रीमों में हल्दी का प्रयोग किया जाता है। विवाह से पूर्व लड़कियों एवं लड़कों को हल्दी लगाने का विधान है, जिसका मुख्य कारण यह है कि हल्दी का लेप लगाने से त्वचा कांतिमय हो जाती है एवं रंग गोरा हो जाता है। हल्दी के साथ–साथ चंदन का लेप लगाना सौंदर्य में अभिवृद्धि कर देता है। रात को सोते वक्त चेहरे पर हल्दी का लेप लगाना चाहिए एवं प्रातः काल उठकर हल्के गुनगुने पानी से धो डालना चाहिए। कुछ दिन नियमितरूप से करने पर चेहरा सुन्दर, सुकोमल हो जाता है।

– विभावरी, जी–9, सूर्यपुरम् नन्दनपुरा, झांसी–284003 (उ. प्र.), मो.:–9415055655

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

अजेय प्राण

वृत्रस्य त्वा श्वसथादीषमाणा विश्वे देवा: अजहुर्ये सखाय:।
मरुद्भिरिन्द्र सख्यं ते अस्त्वथेमा विश्वा: पृतना जयासि।।
—ऋ॰ ८/९६/७

ऋषि:—**तिरश्चीर्द्युतानो वा मारुत:।।** देवता—**इन्द्र:।।** छन्द:—**विराट्त्रिष्टुप्।।**

विनय—हे मेरे आत्मा! तेरे असली साथी तो प्राण ही हैं। जब तक प्राण तेरे साथी नहीं हो जाते तब तक अन्य देवों का साथ बेकार है, प्रत्युत समय पर धोखा देने वाला है। मैं जब उत्तम ग्रन्थ पढ़ता हूँ, सन्तों की वाणी सुनता हूँ, पवित्र उपदेश श्रवण करता हूँ तब मन में बड़े दिव्य, उत्तम विचार उत्पन्न होते हैं; आन्तरिक मनन और भावना से मन की अवस्था ऐसी ऊँची हो जाती है कि हृदय में मानो देवसमाज लग जाता है। मैं अपने को बिल्कुल निर्विकार, निष्काम और पवित्र समझने लगता हूँ, परन्तु पाप–प्रलोभन के आते ही यह सब–का–सब उलट जाता है, वृत्रासुर के सम्मुख आने पर इस सब देव–समाज में भग्गी पड़ जाती है, उसकी फुंकार से सब दिव्य विचार क्षण में उड़ जाते हैं, जरा–सी देर में हृदय में महाबली वृत्रासुर का राज्य जम जाता है। उस समय यह जानता हुआ भी कि मैं बुरा कर रहा हूँ, पाप कर रहा हूँ, पाप की ही ओर खिंचा चला जाता हूँ। मनुष्य इस अवस्था से कैसे पार हो? इसका एक ही उपाय है कि मनुष्य प्राणों की समता प्राप्त करे। प्राणों का सम होना ही प्राणों की (मरुतों की) आत्मा के साथ मैत्री होना है। आत्मा के साथ जुड़ने पर, आत्मा के समीप होने पर प्राण सम और शान्त हो जाते हैं। ये सम हुए प्राण कार्य करने के बड़े, एकल साधन बन जाते हैं। प्राण की सम अवस्था में जो विचार होते हैं, वे स्थिर और दृढ़ होते हैं; इस अवस्था में किये गये संकल्प बड़ा विस्तृत प्रभाव रखते हैं। आत्मशक्ति जब प्राणों को आत्मगृहीत करके उन द्वारा प्रकट होती है तो उसके सामने कोई नहीं ठहर सकता, सब वासनाएँ दब जाती हैं, कोई भी पाप–विचार सिर ऊपर नहीं उठा सकता। बड़े–बड़े प्रलोभन, पाप की बड़ी–बड़ी फौजें आत्मा के एक संकल्प के द्वारा दब जाती हैं, समाप्त हो जाती हैं। आत्माग्नि की एक लपट में भस्म हो जाती है, जब वह आत्म–संकल्प सम हुए, सखा बने हुए प्राणों द्वारा प्रकट होता है और जब आत्माग्नि प्राणमाध्यम द्वारा सहस्त्र–गुणित होकर जल उठती हैं। प्राणों की इस मैत्री को, दोस्ती को पाकर आत्मा क्या नहीं कर सकता? प्राण महाबली है। वह जब तक असम रहता है तब तक उसका बल वृत्रासुर के काम आता है, परन्तु जब वह सम हो जाता है तो वह आत्मा का हो जाता है। आत्मा का सखा प्राण अजेय है।

शब्दार्थ—इन्द्र=हे आत्मन्! **विश्वे देवा:**=सब देव, सब दिव्यभाव **ये सखाय:**=जो तेरे साथी बनते हैं **वृत्रस्य श्वसथात्**=पापासुर के सांस से, फुंकार से, बल–प्रदर्शन से **ईषमाणा:**=डरकर भागते हुए **त्वा**=तुझे **अजहु:**=छोड़ देते हैं। हे इन्द्र! **ते सख्यम्**=तेरी मैत्री, तेरा साथ **मरुद्भि:**=प्राणों के साथ **अस्तु**=यदि होता है या हो **अथ**=तो तू **इमा: विश्वा: पृतना:**=पाप की इस सब बड़ी फौज को **जयासि**=जीत लेता है।

साभार- 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

लागत मूल्य 4100/- रुपये

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

4100/– रुपये का एक वेद सैट 25 प्रतिशत की छूट पर उपलब्ध है

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 200/– रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी।

अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

प्रो॰ विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो॰ विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।